

प्रेस पंजीयन एम.पी.एच.आई.एन./२०११/४८५६५

निर्दलीय प्रकाशन का
स्वर्ण जयंती वर्ष

निर्दलीय

संपर्क-फ-११६/७
शिवाजी नगर, भोपाल

दैनिक निर्दलीय
साप्ताहिक निर्दलीय
और मासिक निर्दलीय

अब तीनों स्वरूपों में वेबसाइट
www.nirdaliya.com पर उपलब्ध
विधि: पहले उक्त लिंक पर जाएं
 फिर क्लिक करें

e-paper, इसके बाद क्षैतिक निर्दलीय जिस तारीख का पढ़ना हो वह तारीख और पृष्ठ संख्या डालें।
 साप्ताहिक हेतु weekly निर्दलीय
 और मासिक हेतु Magazine निर्दलीय क्लिक करें

निष्पक्षता, निर्वैरता व निर्भयता का दैनिक प्रवक्ता

ई-मेल: nirdaliyadaily@gmail.com

वर्ष-५४/१६ अंक- ६९

भोपाल, १६ सितंबर, डाक १७ सितंबर २०२६

भोपाल व नई दिल्ली से प्रकाशित

पृष्ठ - ८

मूल्य १+१/- (संप्रेषण/स्वैच्छिक)

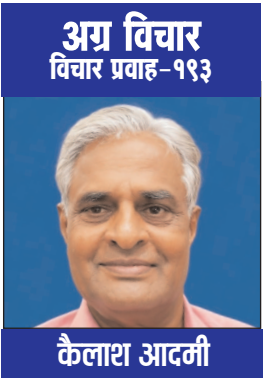
**जलवायु परिवर्तन की विश्व बाधाएं भयावह ।
रोकने के जत्न कर बढ़ें कर्मपथ पर निराभय ।।**

देश-दुनिया में वर्ष के ३६५ दिनों में विभिन्न पर्व एवं त्यौहार मनाए जाने के साथ ही कुछ दिवस राष्ट्रीय स्तर पर तो कुछ दिवस वैश्विक स्तर पर मनाए जाने की परंपरा रही है। वैश्विक स्तर पर मनाए जाने वाले दिवसों में हम ५ जनवरी को विश्व पशु दिवस, ५ जून को विश्व पर्यावरण दिवस और १६ सितंबर को विश्व ओजोन दिवस मनाते आ रहे हैं। इसके साथ ही २ फरवरी को विश्व वेटलैंड दिवस, ३ मार्च को विश्व वन्य जीव दिवस १९ मार्च को विश्व गौरैया दिवस २२ मार्च को विश्व जल दिवस, २४ सितंबर को विश्व नदी दिवस और २८ सितंबर को विश्व समुद्र दिवस मनाए जाते हैं। इसके अप्रैल को विश्व पृथ्वी दिवस १४ मई, २२ मई जै दिवस, ३ जुलाई को विश्व प्लास्टिक छोड़ो दिवस ३ सितंबर को भोपाल गैस त्रासदी दिवस भी वैश्व मनाया जाता है।

आज मैं विश्व रूप से ओजोन दिवस तथा पर्यावरण पर चर्चा कर रहा हूँ किंतु मेरा विचार है कि हमें ओजोन पर्यावरण जैसे मुद्दों को ऊपर उल्लेखित दिवसों से जोड़ना चाहिए क्योंकि ओजोन, पर्यावरण और जलवायु वृद्धि भी प्रभावित करते हैं।

आजोन आक्सिजन के तीन परमाणुओं से मिलने वाली एक गैस है जो वायुमण्डल में बहुत कम मात्रा में (प्रतिशत) में पाई जाती है। समुद्र-तट से ३०-३२ किलोमीटर ऊँचाई पर इसकी सांद्रता अधिक होती है। यह तीखे और अत्यन्त विषैली गैस है। जमीन के सहत के उपर आने वाले वायुमंडल में यह एक खतरनाक दूषक है, जबकि वायुमण्डल की निचली परत ओजोन परत के रूप में यह सूर्य के विकिरण से पृथ्वी पर जीवन को बचाती है, जहाँ इससे ओक्सिजन पर पराबैंगनी किरणों के प्रभावस्वरूप ओजोन ओक्सिजन का एक अपररूप है। यह समुद्र की उपस्थित होती है। ओक्सिजन की एक मंद शुष्क गंध विद्युत् विसर्जन से गुजरे जाने पर ओजोन में परिवर्तित होती है।

यदि ओजोन कि इतिहास पर सरसरी नजर डालें
होता है कि वॉन मैर्म ने सन १७८५ में विद्युत विस्फोट
पास एक विशेष प्रकार की गन्ध का अनुभव किया।
उल्लेख उन्होंने अपने लेखों में किया। १८०१ में क्रिक
ऑक्सीजन में विद्युत विसर्जन करते समय यही गन्ध
१८४० में शानबाइन ने इस गन्ध का कारण एक न
बताया और उन्होंने इसे ओजोन नाम दिया जो यूनानी
यानि 'में सूँघता हूँ' पर आधारित था। सन १८६५ में
सिस्त्रे किया कि यह गैस ऑक्सीजन का एक अपरि
इसका अणुसूत्र O_3 है।



पूरी दुनिया में जो परमाणु परीक्षण किए जाते हैं उन्हें अमेरिका निर्यंत्रित करने का प्रयास करता है। अमेरिका के राष्ट्रपति चाहते हैं कि दुनिया में अमेरिका को छोड़कर कोई अन्य देश परमाणु अस्त्र जैसे संसाधन विकसित ना कर पाए। इसलिए अमेरिका किसी भी अन्य देश को परमाणु शक्ति के रूप में विकसित करने से रोकने का हर संभव प्रयास करता है और जब ईरान जैसे देश अमेरिका के इशारे पर चलने से मना कर देता है तो अमेरिका और उसका पिटु देश इजराइल हमला कर देते हैं।

जब भारत ने श्रीमती इंदिरा गांधी के प्रधानमंत्रित्वकाल में परमाणु परीक्षण किया तो ना केवल अमेरिका बल्कि ब्रिटेन सहित अन्य सभी यूरोपीय देशों ने भारत पर प्रतिबंध लगा दिए। यह बात अलग है कि इंदिराजी को वैश्विक प्रभाव और दबाव के कारण आगे चलकर इन देशों के बंदिशें वापस लेना पड़ी। इसके पश्चात अटल बिहारी वाजपेयी के प्रधानमंत्रित्वकाल में जब परमाणु परीक्षण किया गया तो फिर अमेरिका व अन्य यूरोपीय देशों ने भारत पर बंदिशें लगा दी लेकिन आगे चलकर बंदिशों को हटाना पड़ा।

परमाणु परीक्षण किए जाने से विश्व का जलवायु प्रभावित होता है इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता किंतु अमेरिका या कोई अन्य देश परमाणु परीक्षण का एकाधिकार प्राप्त करना चाहे तो उसे रोकने की जरूरत पड़ जाती है। जब अमेरिका और इजराइल ने ईरान पर हमला किया तथा ईरान के संप्रभु खोमेनेई की हत्या कर दी तब भारत जैसे लोकतांत्रिक देशों को कर्तव्य था कि वे इसकी निंदा करते किंतु इन देशों ने चुपठी साधकर एक तरह से हमलावरों का समर्थन ही किया। यही नहीं प्रधानमंत्री मोदी इस हमले के दो दिन पूर्व इजराइल की राजधानी यरूशलम गए और वहां उन्हें संसद में भाषणबाजी का अवसर मिला तो उन्होंने इजराइल को पीठभूमि निरूपित कर इजराइल के प्रमुख नैतय्याहू का महिमा मंडन करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी और जब इजराइल ने अमेरिका के साथ मिलकर ईरान पर हमला किया तो मोदी ने इसकी निंदा करने की हिम्मत नहीं दिखाई।

यह सभी जानते हैं कि ना केवल परमाणु परीक्षाओं से बल्कि अन्य आयुधों के परीक्षण से भी वैश्विक तपन बढ़ती है। वैज्ञानिकों के अनुसार जलवायु परिवर्तन का खतरा पूरी दुनिया में बढ़ता जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ को इन मुद्दों पर गंभीरता से विचार कर कोई ठोस कदम उठाना चाहिए।

अतः मेरी दो काव्य पंक्तियाँ-
जलवायु परिवर्तन की विश्व बाधाएं भयावह।
रोकने के जल कर बढ़ें कर्मपथ पर निराभय॥



निर्दलीय के लिए उमेश पाठक

राजसमंद/श्रीनाथद्वारा। राजस्थान राजसमंद जिले के श्री नाथद्वारा में सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त साहित्यिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक प्रतिष्ठान साहित्य मंडल द्वारा राष्ट्रीय हिन्दी दिवस का उपलक्ष्य में भगवती देवपुरा प्रेक्षागार में आयोजित त्रिदिवसीय हिन्दी दिवस सम्मान समारोह का स्थान सत्र पंधित मदन मोहन की अध्यक्षता एवं डॉ. अमरनाथ सिंह वधान डॉ.राहुल और उमादत्त शर्मा के विशिष्ट आतिथ्य में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर साहित्यकारों द्वारा लिखी गई दर्जनों पुस्तकों का विमोचन किया गया। आपक बतता दे कि हर वर्ष साहित्य मंडल द्वारा देश भर के वरिष्ठ साहित्यकार व वरिष्ठ पत्रकारों को मानद उपाधि पत्र देकर सम्मानित किया जाता है। समापन सत्र में साहित्य-संस्कृति के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवा के लिए भरतपुर के ब्रजेश शर्मा कोशिकार, भीलवाड़ा के वीरेंद्र कुमार लोढ़ा एवं उदयपुर के प्रो. गोविंदलाल मेनारिया को सम्मानित किया गया।

प्रकाशिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले प्रकाशकों को डॉ. सुंदरलाल कथुरिया स्मृति सम्मान एवं प्रकाशक-संपादक प्रवर्ग की मानद उपाधियों से अलंकृत किया गया जिनमें उत्तर प्रदेश जनपद कासगंज के सोरों जी से पंडित विक्रम पांडेय, मनोज पाराशर एवं उदयपुर की विष्णु शर्मा हितैषी शामिल रहे। मोतीलाल राठी स्मृति सम्मान एवं हिंदी साहित्य भूषण की मानद उपाधि से मुंबई महाराष्ट्र से विनोद कुमार सीताराम, ठाणे महाराष्ट्र से राजकुमार रामलखन यादव अलंकृत किये गए। पृच्छा चतुर्वेदी स्मृति सम्मान से कानपुर की साधना सुच्चर एवं नई दिल्ली की पूर्णिमा अग्रवाल को हिंदी साहित्य भूषण की मानद उपाधि प्रदान की गई।

उक्त सभी साहित्यकारों, पत्रकारों को मेवाड़ की
रस्म अनुसार आन वान शान की मेवाड़ी पगड़ी,
शॉल,श्रीफल, उपर्णा,प्रभु श्रीनाथ जी की
छवि,कंठहार,प्रसाद,कलम,उपधि पत्र एवं नगद
राशि भेंट कर साहित्य मंडल संस्था के अध्यक्ष

मानस मर्मज्ञ पं मदन मोहन शर्मा, प्रधान मंत्री श्याम प्रकाश देवपुरा, चंडीगढ़ विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ अमर सिंह वधान के कर कमलों द्वारा सम्मानित किया गया वहीं जनपद फिरोजाबाद के निवासी अजेन्द्र कुमार शर्मा को पगड़ी पहनाकर व पटका पहनाकर सम्मानित किया गया।

साहित्य मंडल के अध्यक्ष पंडित मदन मोहन शर्मा ने कहा कि हिंदी भाषा संस्कारों की भाषा है जो अपनी सभ्यता और संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखने में बहुमुखी योगदान दे रही हैं। निजिंदरीय कार्यक्रम के संयोजक एवं संस्था के प्रधान मंत्री श्यामप्रकाश देवपुरा के हिंदी भाषा संवर्धन को सराहनीय एवं अनुकरणीय बताते हुए कहा कि समूचे भारतवर्ष के दूरदराज के प्रांतों यथा तमिलनाडु, तेलंगाना, जम्मू कश्मीर, असम, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश आदि से चुनिंदा हिंदी भाषा प्रेमी साहित्यकारों को एक मंच पर लाना और उन्हें सम्मानित करना बड़ा श्रमसाध्य कार्य है जिसे श्यामप्रकाश देवपुरा परिवार की तीन पीढ़ियां सहर्ष संपादित कर रही हैं। श्यामप्रकाश देवपुरा ने कहा कि ये सब प्रभु श्रीनाथराज जी की कृपा और उन्हीं की सत्ता है जो इस महनीय कार्य को, मेरे स्वास्थ्य की विषम परिस्थितियों में भी, मुझसे संपादित करवा रही है।

इस अवसर पर आकाशवाणी के सेवानिवृत्त वरिष्ठ उद्घोषक श्री कृष्ण शरद, वरिष्ठ साहित्यकार व उमेश पाठक, कवि साहित्यकार आनंद निर्मल दीध, कवि हरिओम हरि, ललिता देवपुरा, पीयूष देवपुरा, ओमप्रकाश पाण्डेय वाराणासी, डा.सुषमा जैतू, प्रीती पाण्डेय रायपुर छग, विनोद कुमार समुदाय दुबे मुम्बई महाराष्ट्र, ओम उपाध्याय इन्दौर मध्य प्रदेश, पूर्णिमा अग्रवाल दिल्ली, विमल वच्चा असम, डा नवीन कुमार झरखण्ड, डा ईश्वर एडा आहिर बड़ोदा गुजरात, विमलेंदू बिहार, डा सारस्वत मोहन मनीसी, डा सुरेश कुमार मिश्र हैदराबाद तेलंगाना, डा मंजुला अस्थाना मेहनती उडीसा, शशिर्कांत मिश्र जम्बू कश्मीर सहित बड़ी संख्या में साहित्यकार व पत्रकार व समाज सेवी मौजूद रहें।

ब्रिक्स सम्मेलन: संघर्षों के बीच संवाद की कूटनीति

संजीव ठाकुर

नई दिल्ली में आयोजित ब्रिक्स के १८वें सम्मेलन में ५ की कूटनीति की एक बड़ी उपलब्धि यह रही कि उसने स के बीच संवाद की संभावना को जीवित रखा। भारत ने ब्रि को किसी देश के विरुद्ध मोर्चा बनाने के बजाय विक आर्थिक सहयोग, तकनीक, ऊर्जा, स्वास्थ्य, पर्यावरण वैश्विक संस्थाओं में सुधार का मंच बनाए रखने पर जोर दि

भारत के लिए यह भूमिका इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि वह एक ओर अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ जैसे मंत्रों पर सहयोग करता है, दूसरी ओर रूस और चीन के साथ निरस्त्रता अन्य बहुपक्षीय संस्थाओं में संवाद बना रखता है। यह संतुलन भारतीय विदेश नीति की परिपक्वता दर्शाता है। ब्रिक्स का आर्थिक पक्ष भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। यदि सदस्य देश आपसी व्यापार को अपनी-अपनी रा मुद्राओं में बढ़ाते हैं, सीमा-पर डिजिटल भुगतान प्रणालियों को जोड़ते हैं और वित्तीय सहयोग के नए रास्ते विकसित करने तो भविष्य में डॉलर पर कुछ क्षेत्रों की निर्भरता कम हो सकती है लेकिन यहां भी अतिशयोक्ति से बचना चाहिए। नि भविष्य में डॉलर को समाप्त कर देना या उसकी जगह लि एक क्रिस्म मुद्रा को स्थापित कर देना व्यावहारिक लक्ष्य है। ऊर्जा के क्षेत्र में ब्रिक्स का महत्व तेजी से बढ़ा है। र सकृती अक्ष, ईंधन और संयुक्त अरब अमीरात जैसे देशों उपस्थिति ऊर्जा सुरक्षा के प्रश्न को संगठन के केंद्र में ला है। पश्चिम एशिया में संघर्ष और होमरुज जलडमरूमध्य महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों पर तनाव का सीधा प्रभाव दुनिया तेल कीमतों, मंगाई और आपूर्ति श्रृंखलाओं पर पड़ता 2026 के सम्मेलन के समय भी पश्चिम एशिया का र वैश्विक ऊर्जा बाजार के लिए गंभीर चिंता का विषय बना

तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता भी आने वाले वर्षों में ब्रिक्स की शक्ति का नया आधार बन सकती है। भारत के डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना, चीन की विनिर्माण तकनीकी क्षमता, रूस की वैज्ञानिक-तकनीकी विशेषताएं, खाड़ी देशों की पूंजी और ऊर्जा संसाधन तथा ब्राजील अफ्रीकी देशों के विशाल बाजार मिलकर सहयोग का मॉडल बना सकते हैं। यदि ब्रिक्स अपने भीतर तकनीक, शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, हरित ऊर्जा और डिजिटल भूगर्भ

ठोस सहयोग विकसित करता है तो उसका प्रभाव केवल कूटनीति तक सीमित नहीं रहेगा।

इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक में विश्व व्यवस्था जिस तेजी से बदल रही है, उसमें ब्रिक्स का विस्तार और उसकी बढ़ती भूमिका केवल एक आर्थिक संगठन के विस्तार की कहानी नहीं है, बल्कि यह वैश्विक शक्ति-संतुलन में हो रहे मौलिक परिवर्तन का संकेत भी है। भारत की अध्यक्षता में नई दिल्ली में आयोजित 18वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन ने इस बदलती विश्व व्यवस्था को एक बार फिर अंतरराष्ट्रीय विमर्श के केंद्र में ला दिया है। आज ब्रिक्स केवल ब्राजील, रूस, भारत और चीन से बना पुराना समूह नहीं रहा। इसमें दक्षिण अफ्रीका के बाद मिस्र, इथियोपिया, ईरान, संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब और इंडोनेशिया जैसे महत्वपूर्ण देश जुड़ चुके हैं। वर्तमान ११ सदस्यीय समूह विश्व की लगभग ४९.५ प्रतिशत आबादी, लगभग ४० प्रतिशत वैश्विक जीडीपी और करीब २६ प्रतिशत वैश्विक व्यापार का प्रतिनिधित्व करता है।

इसलिए यह स्वाभाविक है कि ब्रिक्स सम्मेलन को अब केवल विकासशील देशों की बैठक मानकर नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। इसके आर्थिक आकार, ऊर्जा संसाधनों, विशाल बाजार, युवा आबादी, प्राकृतिक संसाधनों और सामरिक स्थिति ने इसे वैश्विक राजनीति का एक प्रभावशाली मंच बना दिया है। विशेष रूप से भारत, चीन और रूस जैसे बड़े देशों के साथ ईरान, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात जैसे ऊर्जा-संपन्न देशों की उपस्थिति ब्रिक्स को आर्थिक ही नहीं, बल्कि सामरिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण बनाती है। जनवरी २०२४ से हुए विस्तार और जनवरी २०२५ में इंडोनेशिया के पूर्ण सदस्य बनने के बाद संगठन की भौगोलिक और आर्थिक पहुंच कहीं अधिक व्यापक हो गई है।

ब्रिक्स की सबसे बड़ी शक्ति उसकी जनसंख्या और बाजारों में निहित है। भारत और चीन अकेले ही विश्व की सबसे बड़ी आबादी वाले दो देश हैं। इनके साथ इंडोनेशिया, ब्राजील, रूस, ईरान, मित्र, इथियोपिया और अन्य सदस्य देशों को जोड़कर विश्व की लगभग आधी मानव आबादी इस मंच से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ जाती है। यह संख्या केवल आंकड़ा नहीं है; यह उपभोक्ता बाजार, श्रमशक्ति, उत्पादन क्षमता, ऊर्जा मांग, तकनीकी विकास और भविष्य की आर्थिक संभावनाओं का विशाल आधार है। यही कारण है कि ब्रिक्स को ग्लोबल साउथ

की आवाज के रूप में अधिक गंभीरता से देखा जा रहा है। यहीं से पश्चिमी देशों की बेचैनी को समझने की आवश्यकता है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक, वैश्विक भुगतान प्रणाली, डॉलर की केंद्रीय भूमिका और पश्चिमी देशों के नेतृत्व वाली वित्तीय संस्थाओं में सुधार की मांग ब्रिक्स देशों के एजेंडे में लगातार प्रमुख होती जा रही है। २०२६ के सम्मेलन से पहले ब्रिक्स के वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक प्रमुखों ने अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं में अधिक प्रतिनिधित्व, पारदर्शिता और जवाबदेही तथा सीमा-पार भुगतान प्रणालियों में सहयोग बढ़ाने पर जोर दिया।

हलांकि ब्रिक्स को पश्चिम-विरोधी संघ गठबंधन समझना भी एक गंभीर भूल होगी। ब्रिक्स की वास्तविक चुनौती पश्चिम को अर्थिक के मैदान में चुनौती देने की है, बल्कि विश्व व्यवस्था को युद्धक बहुकूचीय बनाने की है। भारत इस अंतर को सबसे स्पष्ट रूप से समझने रखता है। भारत के लिए ब्रिक्स का अर्थ अमेरिका या यूरोप से दूरी बनाना नहीं, बल्कि अपनी रणनीतिक स्वायत्तता को सुरक्षित रखते हुए रूस, चीन, पश्चिम एशिया, यूरोप और अमेरिका—सभी के साथ अपने हितों के अनुसार संबंध बनाए रखना है। यही भारतीय विदेश नीति की सबसे बड़ी विशेषता है।

२०२६ का सम्मेलन इस दृष्टि से और भी महत्वपूर्ण रहा क्योंकि ब्रिक्स के भीतर ही अनेक प्रकार के मतभेद मौजूद हैं। भारत और चीन के बीच सीमा तथा व्यापार से जुड़े प्रश्न हैं। ईरान और खाड़ी के कुछ देशों के बीच गंभीर क्षेत्रीय तनाव रहे हैं। रूस और पश्चिम के बीच यूक्रेन युद्ध के कारण गहरा राजनीतिक टकराव है। अमेरिका और ईरान के बीच संघर्ष ने पश्चिम एशिया को अस्थिर बनाया है। ऐसे समय में इतने विविध राजनीतिक हितों वाले देशों को एक साझा मंच पर लाना अपने आप में एक कूटनीतिक प्रशंसा है। सम्मेलन के दौरान भारत की भूमिका इसी कारण विशेष महत्व रखती है।

इरान का प्रश्न विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। इरान २०२४ से अमेरिका का सदस्य है और पश्चिम एशिया में उसकी सामरिक स्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण है। दूसरी ओर संयुक्त अरब अमीराता और सऊदी अरब जैसे देश भी ब्रिक्स में हैं, जिनके अमेरिका ब्रिक्स के साथ पुराने और महत्वपूर्ण सुरक्षा संबंध हैं। इस प्रकार ब्रिक्स के भीतर ही पूर्व और पश्चिम के बीच शक्ति की जटिलता दिखाई देती है। यह संठान किसी एक शक्ति की कठपुतली नहीं

बन सकता, क्योंकि उसके सदस्य देशों के राष्ट्रीय हित एक-दूसरे से कोई बात अलग है। यही उसकी कमजोरी भी है और उसकी लोकतांत्रिक प्रकृति का प्रमाण भी है। फिर भी ब्रिक्स के सामने सबसे बड़ी चुनौती उसकी आंतरिक एकता है। इतने विविध देशों के बीच साझा घोषणापत्र तैयार करना आसान नहीं है। २०२६ के सम्मेलन में भी सदस्य देशों ने कई मुद्दों पर सहमति बनाने की कोशिश की, लेकिन रूस-यूक्रेन युद्ध और प्रथम एशिया जैसे संवेदनशील विषयों पर सभी देशों के हित अलग नहीं हैं।

इस पूरी परिस्थिति में अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया जैसे पश्चिमी देशों के लिए सबसे बड़ी चुनौती यह नहीं है कि ब्रिक्स कल ही पश्चिमी व्यवस्था को समाप्त कर देगा। वास्तविक चुनौती यह है कि दुनिया अब एक कठवीर व्यवस्था को स्थायी मानकर चलने के लिए तैयार नहीं है। वैश्विक दक्षिण अपनी आर्थिक क्षमता के अनुपात में राजनीतिक प्रतिनिधित्व और निर्णय लेने की शक्ति चाहता है। यही मांग ब्रिक्स के विस्तार के पीछे सबसे महत्वपूर्ण प्रेरक तत्वों में से एक है। यहाँ पाकिस्तान का उल्लेख भी आवश्यक है। पाकिस्तान ने ब्रिक्स की सदस्यता में रुचि दिखाई है, लेकिन वह वर्तमान में ब्रिक्स का सदस्य नहीं है। २०२६ के १८वें शिखर सम्मेलन में पाकिस्तान सदस्य देश के रूप में शामिल नहीं था।

अतः बिक्स सम्मेलन को पूर्व बनाम पश्चिम की लड़ाई के रूप में देखना भी सीमित दृष्टिकोण होगा। इसकी असली कहानी विश्व व्यवस्था के पुनर्संरचना की है। पश्चिम के पास आज भी अत्यंत शक्तिशाली वित्तीय संस्थाएँ, उन्नत तकनीकी, सैन्य क्षमता और वैश्विक कंपनियाँ हैं। दूसरी ओर बिक्स के पास विशाल जनसंख्या, प्राकृतिक संसाधन, ऊर्जा, उत्पादन क्षमता, तेजी से बढ़ते बाजार और ग्लोबल साउथ की व्यापक आकांक्षाएँ हैं। आने वाले वर्षों में सफलता उसी पक्ष की होगी जो टकराव के बजाय सहयोग, प्रतिबंधों के बजाय संवाद और प्रभुत्व के बजाय साझेदारी को प्राथमिकता देना।

भारत के लिए यह समय अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत यदि ब्रिक्स को पश्चिम-विरोधी मंच बनने से बचाते हुए ग्लोबल साउथ की वास्तविक आवाज, आर्थिक सहयोग का प्रभावशाली मंच और वैश्विक संस्थाओं के लोकतांत्रिक सुधार का माध्यम बना सके तो यह उसकी सबसे बड़ी कूटनीतिक उपलब्धियों में से एक होगी।

निर्दलीय

निर्दलीय के लिए विशेष मनोज चतुर्वेदी

भोपाल। समता ट्रस्ट द्वारा गांधी भवन स्थित विनोबा कक्ष सभागार में भारतीय भाषाओं, हिंदी की वर्तमान स्थिति तथा भाषाई विवादों के संदर्भ में परिचर्चा आयोजित की गई। इस परिचर्चा में वरिष्ठ समाजवादी चिंतक रघु ठाकुर, वरिष्ठ साहित्यकार विजय सिंह, निर्दलीय समाचार पत्र के संपादक प्रिंस अभिषेक अज्ञानी सहित अनेक बुद्धिजीवियों, साहित्यकारों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं ने सहभागिता की और अपने विचार व्यक्त किए। परिचर्चा में व्यक्त विचारों का सार निम्नानुसार है—

१. देश में भाषा को लेकर समय-समय पर विवाद उत्पन्न होते रहे हैं। विशेष रूप से महाराष्ट्र सहित कुछ राज्यों में हिंदीभाषी नागरिकों के प्रति होने वाली कथित हिंसा, अपमान एवं भेदभाव की घटनाओं पर गंभीर चिंता व्यक्त की गई। महाराष्ट्र जैसे राज्यों में हिंदीभाषी श्रमिकों, ऑटो रिक्शा चालकों, रेहड़ी-पटरी व्यवसायियों तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के साथ होने वाले भेदभाव और हिंसा के प्रश्न को गंभीर बताया गया। वक्ताओं ने इस बात पर भी चिंता व्यक्त की कि भाषाई विवादों का सबसे अधिक प्रभाव प्रायः समाज के कमजोर और आर्थिक रूप से असुरक्षित वर्गों पर पड़ता है।

२. स्पष्ट रूप से कहा गया कि भारत भाषाई विविधता वाला देश है और इसकी प्रत्येक भाषा देश की सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा है। हिंदी के सम्मान और संवर्धन का अर्थ किसी अन्य भारतीय भाषा का विरोध करना नहीं है। सभी भारतीय भाषाओं के प्रति सम्मान, अपनत्व और समावेश की भावना आवश्यक है। भाषाई विविधता हमारी कमजोरी नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक शक्ति है। इसलिए किसी भी भाषा को लेकर श्रेष्ठता अथवा हीनता की भावना से बचना चाहिए। आवश्यकता इस बात की है कि हिंदी के साथ-साथ तमिल, तेलुगु, मराठी, बांग्ला, गुजराती, पंजाबी, मलयालम, कन्नड़ तथा अन्य सभी भारतीय भाषाओं को समान सम्मान की दृष्टि से देखा जाए।

३. परिचर्चा का एक प्रमुख विषय यह रहा कि हिंदी के सम्मान की शुरुआत हमें स्वयं अपने जीवन और व्यवहार से करनी होगी। यदि हम स्वयं अपनी भाषा को महत्व नहीं देंगे, तो दूसरों से उसके सम्मान की अपेक्षा करना उचित नहीं होगा। आज हम अपने नामों, स्थानों और दैनिक व्यवहार में अनावश्यक रूप से विदेशी शब्दों का प्रयोग करने के अभ्यस्त होते जा रहे हैं। अपने शहरों, मोहल्लों, गलियों और चौराहों की पहचान को संक्षिप्त या परिवर्तित करने की प्रवृत्ति भी बढ़ रही है।

४.वर्तमान समय में हमारे पारिवारिक और सामाजिक जीवन में विदेशी शब्दों का प्रयोग तेजी से बढ़ रहा है। उदाहरण के लिए, माता-पिता, माँ-पिताजी अथवा अम्मा-बाबा जैसे आत्मीय शब्दों के स्थान पर माँम-डैड का प्रयोग सामान्य होता जा रहा है। इसी प्रकार रसोईघर के स्थान पर किचन तथा स्नानघर के स्थान पर बाथरूम जैसे शब्दों का अत्यधिक प्रयोग बढ़ गया है। किसी अन्य भाषा के शब्दों का प्रयोग करना गलत नहीं है, क्योंकि भाषाएँ परस्पर आदान-प्रदान और समावेश से समृद्ध होती हैं किंतु चिंता का विषय तब उत्पन्न होता है जब हम अपनी भाषा के शब्दों को हीन समझने लगते हैं या उन्हें अपने व्यवहार से पूरी तरह दूर कर देते हैं। इसलिए आवश्यकता संतुलन की है—अन्य भाषाओं का सम्मान करते हुए अपनी मातृभाषा, हिंदी और भारतीय भाषाई संस्कारों के प्रति भी आत्मसम्मान बनाए रखना चाहिए।

५. परिचर्चा में यह प्रश्न भी उठाया गया कि देश में अनेक व्यक्ति और संस्थाएँ हिंदी भाषा के माध्यम से प्रसिद्धि, लोकप्रियता और आर्थिक सफलता प्राप्त करती हैं। फिल्म, टेलीविजन, पत्रकारिता, साहित्य और जनसंचार के अनेक क्षेत्रों में हिंदी एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हिंदी के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाने वाले अनेक प्रभावशाली व्यक्ति हैं, किंतु जब हिंदीभाषी नागरिकों के साथ भेदभाव या हिंसा की घटनाएँ सामने आती हैं, तब प्रभावशाली वर्गों का मौन चिंताजनक प्रतीत होता है।

६. वक्ताओं ने विशेष रूप से इस तथ्य पर चिंता व्यक्त की कि भाषाई भेदभाव का शिकार प्रायः ऑटो रिक्शा चालक, मजदूर, छोटे दुकानदार, रेहड़ी-पटरी व्यवसायी और अन्य कमजोर वर्ग के लोग होते हैं। इसके विपरीत, बड़े उद्योगों, फिल्म जगत अथवा आर्थिक रूप से संपन्न और प्रभावशाली वर्गों के लोगों के साथ उसी प्रकार का व्यवहार प्रायः देखने को नहीं मिलता। महाराष्ट्र के फिल्म और सांस्कृतिक जगत में अनेक हिंदीभाषी कलाकार, निर्देशक, लेखक, तकनीशियन और रंगकर्मी सक्रिय हैं। इसलिए यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि यदि भाषाई पहचान के आधार पर किसी व्यक्ति का विरोध किया जाता है, तो उसका प्रभाव मुख्यतः कमजोर वर्गों पर ही क्यों दिखाई देता है? वक्ताओं ने कहा कि समाज के संपन्न, शिक्षित और प्रभावशाली वर्ग को कमजोर वर्गों के पक्ष में आगे आकर अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए।

७. भाषा के आधार पर किसी भी प्रकार की घृणा देश की एकता और अखंडता के लिए उचित नहीं है। भारत विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों, परंपराओं और क्षेत्रों का देश है। यही विविधता भारत की सबसे बड़ी विशेषता है। यदि भाषा के नाम पर समाज को

विभाजित किया जाएगा, तो इससे सामाजिक सौहार्द और राष्ट्रीय एकता कमजोर हो सकती है। भाषाई असहमति को संवाद और संवैधानिक मूल्यों के आधार पर सुलझाया जाना चाहिए, न कि हिंसा, धमकी या घृणा के माध्यम से।

८. परिचर्चा में यह भी कहा गया कि पहले सामाजिक और जनआंदोलनों की शक्ति जमीनी स्तर से विकसित होती थी। आम नागरिकों, श्रमिकों और समाज के विभिन्न वर्गों के साथ संवाद करके उनकी समस्याओं को समझा जाता था। जनभावनाओं और जमीनी अनुभवों के आधार पर आंदोलन तथा सामाजिक निर्णय आगे बढ़ते थे। वर्तमान समय में कई बार निर्णय ऊपर से नीचे की ओर थोपे जाने की प्रवृत्ति दिखाई देती है, जबकि जमीनी स्तर पर संवाद और सहभागिता अपेक्षाकृत कम होती जा रही है। वक्ताओं ने इसे लोकतांत्रिक और सामाजिक दृष्टि से चिंता का विषय बताया तथा संवाद की संस्कृति को मजबूत करने की आवश्यकता पर बल दिया।

९. वक्ताओं ने कहा कि भारत के विभिन्न राज्यों में लोग रोजगार, व्यवसाय और जीविकोपार्जन के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं। हिंदीभाषी राज्यों में भी अन्य राज्यों के नागरिक बड़ी संख्या में कार्य करते हैं और समाज का हिस्सा बनते हैं। स्वाभाविक रूप से किसी भी व्यक्ति को उस राज्य की स्थानीय भाषा, संस्कृति और परंपराओं का सम्मान करना चाहिए जहाँ वह निवास करता है। स्थानीय भाषा को सीखने का प्रयास करना और स्थानीय समाज के साथ संवाद स्थापित करना सामाजिक सद्भाव को मजबूत करता है। साथ ही, व्यक्ति को अपनी मातृभाषा बोलने और अपनी भाषाई पहचान बनाए रखने का भी पूर्ण अधिकार है। स्थानीय भाषा के सम्मान और अपनी मातृभाषा के सम्मान—दोनों के बीच कोई विरोध नहीं होना चाहिए।

१०. परिचर्चा में यह विषय भी सामने आया कि दक्षिण भारत के अनेक क्षेत्रों में हिंदी फिल्मों और हिंदी मनोरंजन माध्यमों की व्यापक पहुँच है। अनेक लोग हिंदी फिल्मों और संवादों को समझते तथा उनका आनंद लेते हैं। इसके बावजूद भाषा को लेकर कई स्थानों पर विवाद और तनाव उत्पन्न होना चिंतन का विषय है। वक्ताओं का मत था कि किसी भी क्षेत्रीय भाषा के संरक्षण और सम्मान का अधिकार पूर्णतः उचित है, किंतु उसके नाम पर किसी दूसरी भारतीय भाषा के बोलने वालों के प्रति घृणा या हिंसा उचित नहीं हो सकती।

११. इतिहास इस बात का साक्षी है कि हिंदी के विकास और प्रसार में अनेक ऐसे महान व्यक्तित्वों ने योगदान दिया जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं थी। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने जनसंपर्क और राष्ट्रीय एकता के लिए भारतीय भाषाओं तथा हिंदी के महत्व को समझा और उसके व्यापक प्रयोग को प्रोत्साहित किया। सरदार वल्लभभाई पटेल, रवीन्द्रनाथ टैगोर सहित अनेक राष्ट्रीय नेताओं और साहित्यकारों ने भारत की भाषाई एवं सांस्कृतिक एकता को महत्वपूर्ण माना। इससे यह स्पष्ट होता है कि हिंदी अथवा किसी भी भारतीय भाषा का विकास केवल उस भाषा के मातृभाषियों की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह देश की साझा सांस्कृतिक चेतना का विषय है।

१२. वक्ताओं ने चिंता व्यक्त की कि कई बार भाषा और क्षेत्रीय पहचान के प्रश्नों का उपयोग राजनीतिक लाभ के लिए किया जाता है। राजनीतिक मतभेद स्वाभाविक हैं, किंतु भाषा और क्षेत्र के आधार पर समाज में भय अथवा घृणा का वातावरण बनाना अत्यंत हानिकारक हो सकता है। भाषा लोगों को जोड़ने का माध्यम होनी चाहिए, न कि उन्हें विभाजित करने का साधन। इसलिए राजनीतिक और सामाजिक नेतृत्व की जिम्मेदारी है कि वह भाषाई सद्भाव और राष्ट्रीय एकता को प्राथमिकता दे।

समाजसेवी हरिनारायण चौकसे नहीं रहे

निर्दलीय संवाद

भोपाल। चिकित्सासेवी व राष्ट्रीय कलचुरी कवि परिषद के प्रदेशाध्यक्ष हरिनारायण चौकसे नहीं रहे। वे निर्दलीय प्रकाशन के अनन्य सहयोगी एवं समाजसेवी सुरेश चौकसे के अनुज थे। सुरेश चौकसे की पत्नी श्रीमती राजकुमारी चौकसे ‘प्रेरणा’ निर्दलीय प्रकाशन के संरक्षक सह परामर्श मंडल की सदस्य हैं।

गत दिवस हरिनारायण चौकसे जी के देहावसान उपरांत अयोध्या बायपास पर सुदामा सनसिटी स्थित उनके निवास में उनकी पार्थिव देह आज दोपहर अंतिम दर्शनार्थ रखी गई। वहां सैकड़ों लोगों ने उन्हें



सृजनधर्मी सुरेश चौकसे को भ्रातृ शोक

श्रद्धांजलि अर्पित की।

तदनंतर उनकी अंतिम यात्रा आनंद नगर विश्रामघाट के लिए खाना हुई उसमें चौकसे परिवार के हजारों आत्मिकजन सम्मिलित हुए जिनमें शासन- प्रशासन के अधिकारी - कर्मचारी, राजनेता, शिक्षाविद, साहित्यकार, समाजसेवी, चिकित्सासेवी, अधिवक्ता, पत्रकार व उद्यमी आदि बड़ी संख्या में शुमार थे। शमशान घाट में अंतिम संस्कार उपरांत शोक सभा में भी उन्होंने श्रद्धांजलि ज्ञापित की। निर्दलीय समाचार पत्र समूह सह प्रकाशन की ओर से संपादक प्रिंस अभिशेख अज्ञानी ने सम्मिलित होकर मृतात्मा को नमन किया और शोक संतप्त परिवार को सांत्वना दी। उल्लेखनीय है कि ब्रम्हलीन हरिनारायण चौकसे अपने पीछे स्वयं के अलावा पांच भाईयों बालमुकुंद, जयगोपाल, सुरेश,

हरगोविंद व रवि चौकसे, पुत्रद्वय अंशुल एवं अनुज, भतीजेगण शैलेश, सतीश, संतोष, सुनील, राजेश, अभिषेक, अर्पित, अर्जित, अमित, अमन, ओम, आदर्श, राजा एवं अर्पण तथा भतीजी गुंजन चौकसे (प्रदेश प्रवक्ता भारतीय जनता पार्टी/वरिष्ठ अधिवक्ता सर्वोच्च न्यायालय) आदि का भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं। गुंजन चौकसे समग्र नारी शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हुए ना सिर्फ अंतिम यात्रा में अपितु अंतिम संस्कार के अवसर पर भी बराबरी से साथ रहीं। हरिनारायण जी चौकसे के निधन पर निर्दलीय के संस्थापक संपादक कैलाश आदमी ने गहन संवेदनाएं व्यक्त की और शोक संतप्त चौकसे परिवार को यह अपार दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करने की कामना परम सत्ता से की।